

संक्षिप्त दासबोधामृत सप्तशती

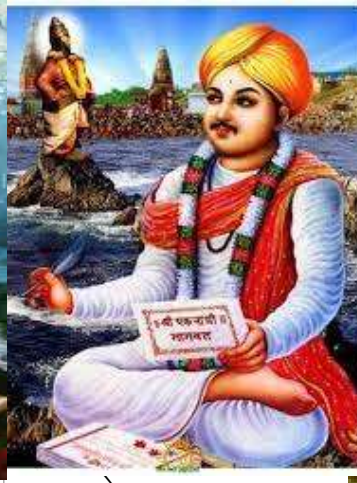
आधि नमुनि मी आज गणपती | शारदेसही, करी विनन्ती | सुचवा 'वेचक' शब्द 'सार्थ' ही | 'दासबोध' संक्षिप्त गुन्फावया ||



ज्ञानदेवे जो रचिला पाया |
ज्ञान ईश्वरी व्यक्त कराया |



त्या अमृत वाङ्मयी मन्दिरा |
कळस तुक्याने हा झळकवला |१|



एकनाथे तर "भागवतान्चा |
धर्म" भारुडी ग्रन्थित केला |



रामदास, तुम्हि 'बोध_मनाचा' |
सत्शिष्यान्ना बोधित केला |२|

दहा समासी 'दशक' एक, त्या | "वीस_दशक" शब्दान्च्या ओव्या | 'दासबोध' या रचुनी ग्रन्था | भक्तीच्या दाखविल्या वाटा |३|
तुमच्या चरणी ठेउनि माथा | विनन्ती अशी करी मी तुम्हा | "सारान्शाने एकदा पुन्हा | तेच सान्गण्या, बुद्धि द्या मला |४|
वापरुनिया शक्य तेवढ्या | ओव्या तुमच्या जशाच्या तशा | राखुनि ग्रन्थाच्या गाभार्था | रचनेचा 'उद्देश' ही तुमचा |५|
समजावा या नव्या पिढीन्च्या | आबाल, तरुण सर्व व्यक्तिना | दासनवमीला, स्मृतीस तुमच्या | 'अल्प'च समयि वाचुन व्हावा" |६|

संक्षिप्त समर्थ_रामदास चरित्र (चाल : ओवी)

इसवी सन् सोळाशे आठ | जालना जिल्ह्यात 'जाम्ब' क्षेत्र | मुलगा जन्मला रामनवमीस | नाम ठेविले 'नारायण' (७)
पिता सूर्याजीपन्त ठोसर | देशस्थ ब्राह्मण, 'कुलकर्णी' पद | माता राणूबाई सुन्दर | कुळी अति_उत्तम चाली रीती (८)
पाचव्या वर्षी झाली मुन्ज | बाराव्या वर्षी उभा लग्नास | "शुभ मंगल सावधान" शब्द | ऐकताच पळाला 'सावध' होउनी (९)
माझे अवतारकार्य करावया | गृहस्थाश्रम टाळावया हवा | या प्रेरणेने करी तपश्चर्या | अभ्यास उपनिषद, वेदशास्त्रादिका (१०)
"श्रीराम जय राम जय जय राम" | मन्त्र हा श्वासोच्छ्वासी वदत | करुनी तीर्थाटने हिन्डत | गाजवी सामर्थ्य विद्वत्जनी (११)
अपार केली ग्रन्थ रचना | मनोबोध, दासबोध, करुणाष्टकादिका | 'जागृती' पूर्ण समाजात घडवण्या |

'उपेक्षा' न करण्यास अन्यायान्ची (१२)

मारुती मन्दिरे सैनिकी प्रशिक्षणा | स्थापोनि समाजात स्वाभिमान_बाणा | शिवरायान्च्या 'स्वराज्य' संस्थापना |
सहाय्यक वातावरण निर्मिती केली (१३)

शिवरायास करुनी मार्गदर्शन | सज्जनगडावर 'मठ' स्थापुन | 'कल्याण' शिष्यादिकांस प्रबुद्ध करुन | समाप्त केले 'अवतारकार्य' |
(१४)

इसवी सन् सोळाशे ब्याऐन्शीत | माघ मासी कृष्ण नवमीस | विलीन जाहले अनंतात | स्वामी समर्थ_रामदास (१५)

जय जय रघुवीर समर्थ !

संक्षिप्त दासबोधामृत : अध्याय १ : 'स्तवने' तथा 'सदाचारी, दुराचारी व्यक्तिमत्त्व लक्षणें'

(मूळ दासबोध दशक १ : स्तवन)

- ग्रन्था नाम 'दासबोध' | गुरुशिष्यान्वा संवाद | येथ बोलिला विशद | भक्तिमार्ग (१.१) [१.१.२]
- शिवगीता, रामगीता | गुरुगीता, गर्भगीता | उत्तरगीता, अवधूत गीता | वेद आणी वेदान्त (१.२) [१.१.१८]
- भगवद्गीता, ब्रह्मगीता | हंसगीता, पाण्डवगीता | गणेशगीता, यमगीता | उपनिषदे, भागवत (१.३) [१.१.१९]
- ऐशिया नाना ग्रन्थान्च्या संमती | उपनिषदे, वेदान्त श्रुती | आणि मुख्य 'आत्म_प्रचीती' | शास्त्रे सहित (१.४) [१.१.१५]
- नासे अज्ञान, दुःख, भ्रान्ती | शीघ्रचि 'ब्रह्म_ज्ञान' प्राप्ति | ऐसी आहे फलश्रुती | इये ग्रन्थी (१.५) [१.१.३०]
- ॐ नमोजी गणनायका | सर्व सिद्धिफलदायका | अज्ञान, भ्रान्ती छेदका | बोधरूपा (१.६) [१.२.१]
- सर्वकाळ मदोन्मत्त | सदा स्वानन्दे डुल्लत | हर्षे निर्भर उदित गात्र | सुप्रसन्न वदनू (१.७) [१.२.९]
- जयासी ब्रह्मादिकही वन्दिती | ऐसा गणेश 'मन्गलमूर्ती' | तो म्या स्तविला यथामती | वान्छोनिया कार्यसिद्धि (१.८) [१.२.२७-३०]
- आता वन्दीन वेदमाता | शब्दमूळ वाग्देवता | जे सत्व_लीला सुशीतला | लावण्यखाणी (१.९) [१.३.१-१०]
- जयजयाजि सद्गुरुराजा | विश्वम्भरा, विश्वबीजा | परम पुरुषा मोक्ष_ध्वजा | दीन बन्धू (१.१०) [१.४.८]
- जे का सरिता गंगेसि मिळाली | मिळणी होताचि गंगाचि झाली | तैशीच सत्शिष्यास सद्गुरुत्व प्राप्ति | हे तव सामर्थ्य वंदितो मी (१.११) [१.४.१३-१६]
- आता वन्दीन सन्त सज्जन | जे परमार्थाचे अधिष्ठान | जयान्चे कृपेने 'ब्रह्म_ज्ञान' | प्रगटे जनी सुल्लभ (१.१२) [१.५.१-२]
- संत आनंदाचे स्थळ | संत धर्माचे धर्मक्षेत्र | सायुज्य_मुक्तीच करिती 'दान' | 'संगती'नेच सर्वकाळ (१.१३) [१.५.१६-२३]
- आता वन्दू श्रोते सज्जन | भक्त, ज्ञानी, सद्गुणसंपन्न | सत्वसागर, बुद्धिचे आगर | आत्मज्ञानी, गुणग्राहक (१.१४) [१.६.१-११]
- आता वन्दू कवीश्वर | जे शब्दसृष्टीचे ईश्वर | जे शब्दरत्नान्चे सागर | बृहस्पतीसम चातुर्यमूर्ती (१.१५) [१.७.१६-२३]
- आता वन्दू सर्व सभा | जेथे 'जगदीश'च स्वये उभा | सिद्ध, साधू, साधका सहित हा | जयजयकारे गर्जतोही जो (१.१६) [१.८.१-१२]
- आता स्तवू हा मार्ग 'परमार्थ' | जो सर्व साधकान्चा निजस्वार्थ | परम सुगम असुनही भासे दुर्गम | 'वर्म' चुकल्यामुळे अज्ञ जना (१.१७) [१.९.१-२]
- जेणे 'परमार्थ' ओळखिला | तेणे जन्म सार्थक केला | पूर्वजासही उद्धरोनिया | सत्सन्ने विलीन परब्रह्मी (१.१८) [१.९.१९-२७]
- धन्य धन्य हा 'नरदेह' | जेणे घडे अपूर्व 'परमार्थ' लाभ | अहन्ता सान्दूनि 'स्वानन्द' सुख | स्वयत्ने उत्तम पदे प्राप्त होती (१.१९) [१.१०.१-१९]
- नसता आन्धळा, पान्गळा मुका | बधिर, मौर्ख्य आदिक व्यन्गता | सौभाग्ये लब्ध ही शारीरिक क्षमता | राखावी स्वच्छ, रोगमुक्त (१.२०) [१.१०.२८-३२]
- 'माझे' म्हणुनि बान्धती घरे, बन्गले | तेथे घुसती मुन्या झुरळे | भ्रमर, विन्चू, ढेकूण, मुन्गळे | तस्कर, पाहुणे, माजारि, मूषक (१.२१) [१.१०.३४-५०]
- हे सर्व म्हणती "हे घर माझे" | शेकडो मुन्या, डांस, मुन्गळे | लाखो सूक्ष्मत्वे अदृश्य कीटके | म्युनिसिपल दाखला मनुष्याला (१.२२)
- 'स्वदेहा'स म्हणावे 'माझे' घर | तरी तेथेही कोट्यावधी सूक्ष्म जीव | अब्जावधी सजीव पेशीन्चे भाण्डार | ब्रह्मदेवे रचनाच केली ऐशी (१.२३)
- 'स्वदेह'च जाणावे 'माझे' घर | ईश्वर कृपेने 'नरदेह' सम्प्राप्त | परमार्थी झिजवोनि करा 'सार्थक' | प्रापन्धिक दुःखात भ्रमू नये हो (१.२४) [१.१०.५१-६२]

(मूळ दासबोध दशक २ : नाना स्वभाव वा व्यक्तिमत्व लक्षणे)

देह नराचा अथवा पशूचा | तो तर आहे एक 'सांपळा' | आंत कोन्डिला पोपटासमच हा | जीवात्मा स्वयम् ब्रह्मदेवे (१.२५)
सद्भाग्ये लाभला 'सांपळा' नराचा | नसे पन्गुत्व वा बुद्धिमन्दता | नसे दरिद्री, भिकारी, पोरका | हे सौभाग्य दैवी जाणावे (१.२६)
उन्चापुरा, बुटका, खुजा | काळाकुट्ट, गोरा, भुरा | बाल, तरुण, पोक्त, वार्धक्यता | ही व्यक्तिमत्त्वे नर शरीरान्ची (१.२७)
गोरीपान, सुन्दर देखणी | काळीकुट्ट, वान्झ, राक्षसी | ऐशी वर्णने स्त्री शरीरान्ची | दैवे सम्प्राप्त दृश्य व्यक्तिमत्त्वे (१.२८)
परन्तू चातुर्य अथवा हुषारी | भोळेपणा, वा चावट वृत्ती | क्रौर्य, मौर्ख्यत्व वा हजरजबाबी | चर्मचक्षुस अदृश्य लक्षणे ही (१.२९)
ज्ञानचक्षुगम्य या लक्षणांनी | नर, नारीन्चे व्यक्तिमत्व जाणुनी | व्यवहार करावा सावधपणानी | संसार सागर तरावया (१.३०)
चान्गले सद्गुण आत्मसात करावे | वाईट दुर्गुण सर्वथा त्यागावे | येणेच आध्यात्मिक पातळी वाढे | सामिप्यही वाढते देवाजवळचे (१.३१)
मूर्ख वा उत्तम सद्विद्यावन्त | अज्ञानी, तमोगुणी, कुविद्यावन्त | सद्भक्त सात्विक विरक्तिवन्त | रजोगुणी व्यक्ती वागती कैसे ? (१.३२)

हे ज्ञान नीट जाणोनि घेउनी | सन्त सज्जनान्ची धरावी सन्गती | दुष्ट, दुर्जनान्ची टाळावी कुसन्गती |

आत्मोद्धारासाठी प्रयत्न_पूर्वक (१.३३)

कुळेवीण कन्या वरी | श्वशुरगृहीच निवास करी | स्वमातापिता गणगोत्र त्यागी | तो एक मूर्ख (१.३४) [२.१.८_१०]
सामर्थ्येवीण सत्ता करी | आपुली आपण स्तुती करी | अकारणच हास्य करी | तो एक मूर्ख (१.३५) [२.१.११_१३]
अपराधाविण दंडन करी | उपकारकर्त्यासि अनोपकारी | आपणास आपणच वधी | तो एक मूर्ख (१.३६) [२.१.२६_३७]
अक्षरे गाळून वाचन करी | अथवा नसतीच घाली पदरीची | मातृ, पितृ, देश घातकी | तो एक मूर्ख (१.३७) [२.१.४४_७०]
ऐसी अपार मूर्ख लक्षणे | जाणोनि त्यान्चा त्याग करणे | मूर्खान्ची सन्गतही शक्य तो टाळणे | विवेकवन्त सज्जनान्ची (१.३८)
[२.१.७२_७४]

आता 'उत्तम' वागण्यान्ची | ऐका यादी सावधान चित्ती | खूण जी सूझ, सर्वज्ञपणाची | अंगिकारा प्रयत्ने अभ्यासावया (१.३९)
वाट न पुसता चालो नये | विचारेवीण बोलो नये | अपरात्री पन्थ क्रमू नये | येकायेकी (१.४०) [२.२.२_५]
पापद्रव्य जोडू नये | पुण्यमार्ग सोडू नये | वक्त्याचे मत खोडू नये | कधीकाळी (१.४१) [२.२.६_८]
लटिका पुरुषार्थ बोलो नये | केल्यावीणच सान्गो नये | व्यर्थच चिन्ता करू नये | कदापीही (१.४२) [२.२.२_५]
धूम्रपान करू नये | कुळाचार खण्डू नये | नैष्ठुर्ये जीव हाणू नये | विचारेविण (१.४३) [२.२.२५_३७]

ऐका कुविद्येची कुलक्षणे | वेचून सान्गतो जी ती त्यागणे | अन्यही स्वबुद्धीने पारखणे | मुक्ति त्यांपासुनी साधावया (१.४४)
काम, क्रोध, मद, मत्सर | लोभ, दम्भ, तिरस्कार | गर्व, ताठा, दुरहन्कार | द्वेष, विषाद, विकल्प (१.४५) [२.३.४]
दुराशा, तृष्णा, वाह्यात कल्पना | चिन्ता, असूया, लौलुप्यता, वासना | आळस, कृपणता, निन्दा, बाष्कळता | भ्रष्ट दाम्भिकता
त्यागावी (१.४६) [२.३.५_१८]

वादनता, पैशून्य, असत्य भाषण | चावट, लम्पट, निर्लज्ज वचन | कापट्य, खट्याळ, अविचारी कर्म | त्याज्य कुविद्या जाणावी (१.४७) [२.३.१९_३०]

अधीरता, अनाचार, उद्धटपणा | भक्ति_ज्ञान_वैराग्यहीन अशान्तता | ऐशिया कुलक्षणांपासून मुक्तता | ईश्वराशी सामिप्य वाढवीतसे (१.४८) [२.३.३३_४०]

ईश्वराशी गांठ बान्धून घ्यावया | **विभक्तते'तून 'मुक्त'** व्हावया | ईश्वरी प्रेम, मिळवावया | भगवद्भजन करा भक्ति पूर्ण (१.४९)
सद्वासना, सत्समागम | स्नान, सन्ध्या, पूजा, अध्ययन | व्रतोपवास, हरिकथा श्रवण | पूर्वपुण्ये लाभे देवभक्तान्ना (१.५०)
[२.४.१_२]

ईश्वरी 'सामिप्य' साधावया | जास्तीत जास्त वेळ **'सार्थकी'** घालवा | 'ईश्वर' संबन्धित कार्ये करा | श्रवण, पठण, मननादि मार्गे
(१.५१) [२.४.३_४]
अथवा करावा दानधर्म | पुरश्चरणे, परोपकार | त्रिकरणे काया, वाचा, मन | गुन्तवावी 'सार्थक' कार्यात (१.५२) [२.४.६_११]
समाजातील बहुसन्ध्व्य व्यक्ती | 'परोपकारी' वृत्तीत गुन्तती | तेणेच 'आत्महित'ही ते साधती | प्रसन्नी वेळेनुसार सर्व (१.५३)
[२.४.१२_१३]

सत्वगुणे भगवद्भक्ती | रजोगुणे पुनरावृत्ती | तमोगुणे अधोगती | पावती प्राणी (१.५३) [२.५.२]
माझे घर, माझा पिता | माझी माता, भगिनी, कान्ता | पुत्र, पौत्र, सुना, दुहिता | यान्च्या सौख्याची काळजी वाही (१.५४)
[२.५.८_१०]
इतर परक्यान्चे होवो कांहीही | हीच **"रजोगुणी_वृत्ती"** जाणावी | धन, धान्य सन्चय 'स्वकीया'साठी | 'इतरां'वरी करी अन्याय
(१.५५) [२.५.८_१६]
जे जे दृष्टीस पडे 'चान्गले' | मनी म्हणे ते ते **"माझेच_असावे"** | लभ्य न होता दुःखे व्यापिले | मन रजोगुणी जीवात्म्यान्चे
(१.५६) [२.५.२१_२३]
साम, दाम, दंड, भेदे | प्रसन्नी तस्करी, लबाडी करणे | अनुचित मार्गेही 'स्वार्थ' साधणे | ही रजोगुणी प्रवृत्ती (१.५७)
शृन्गार, विनोद, टवाळी, निन्दा | एवढाच करमणुकीचा धन्दा | मनाला आवडे स्वस्तुती, परनिन्दा | खेळ हा जाणावा रजोगुणाचा
(१.५८) [२.५.२४_२४]
'मी' आहे अमुक, असा वा तसा | माझा पिता, गुरु, शिष्य असा असा | ऐशी 'मी', 'माझी'ची भाषा | अन्निचा 'रजोगुण'च
बोलवीतसे (१.५९)

घटम् भिन्द्यात्, पटम् छिन्द्यात्, कुर्यात् रासभ रोहणम् | येन केन प्रकारेण, प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्

"मडकी फोडा, वस्त्रे फाडा | अथवा गर्दभारोहित हिन्डा | **'प्रसिद्धी' मिळवण्याचा छन्द हा धन्दा**" | हे रजोगुणी वर्तन जाणावे
(१.६०)

'मते' मिळवण्यास जे राजकारणी | ऐसेच उपद्रव्याप अवलम्बिती | त्यान्ची 'रजोगुणी' ही प्रवृत्ती | ओळखावी मनी शहाण्याने
(१.६१)

आता ऐका **तमोगुण** | नोळखे माता, बन्धू, बहिण | घ्यावा वा द्यावा म्हणे प्राण | अतिरेकी, अविचारी, दुर्वर्तनी (१.६२)
[२.६.१_४]

अति क्रोधे 'पिशाच्या'परी | वावरे नावरे कोणासही | अखंड भ्रान्तीतच आदळी आपटी | अथवा आळशी निद्रिस्त राहे (१.६३)
[२.६.५_८]

स्त्रीहत्या, भ्रूणहत्या | आत्महत्या, ब्रह्महत्या | गोहत्या, आदिक कृत्या | आवडीने करू पाहे (१.६४) [२.६.९_१२]
परपीडेने संतोषे | भांडण लावून 'कौतुक' पाहे | कट्ट, बोचरी भाषा बोले | तो 'तमोगुणी' ओळखावा (१.६५) [२.६.२१_३८]

आता वर्णू **'सत्व'गुण** | जो 'उत्तम' गतीस मूळ कारण | जेणे घडे 'मोक्ष' संपादन | संतोष, समाधान मनी नान्दे (१.६६)
[२.७.१_६]

जो पुण्याचे 'मूळपीठ' | **'ईश्वरी_प्रेम' संपादक** | अभ्यन्तरी निर्मळ, सोज्वळ | तोचि 'सत्व'गुण ओळखावा (१.६७) [२.७.७_१५]
धन_दान, वस्त्र_दान | सहस्रभोजन, ब्राह्मण संतर्पण | अन्तस्फुर्तिने व्रते, देवतार्चन | **निष्कामी** 'सत्व'गुण ओळखावा (१.६८)
[२.७.१६_१७]

बान्धवी वापी, सरोवरे | नाना देउळे, राउळे | धर्मशाला, तुलसी वृन्दावने | तोचि 'सत्व'गुण ओळखावा (१.६९) [२.७.१९_२७]

श्रवण, मनन, निजध्यासक | शुद्ध आत्मज्ञानाची लागली आंस | निरहन्कारी नम्र सुसंस्कृत | तोचि 'सत्व'गुणी ओळखावा (१.७०) [२.७.६१_६४]

सत्वगुणे भगवद्भक्ती | सत्वगुणे ज्ञानप्राप्ती | सत्वगुणे सायुज्य_मुक्ति | पाविजे सहजच (१.७१) [२.७.८६]

ऐका **सद्विद्येची लक्षणे** | तार्किक तारतम्य जाणणे | ज्ञान, विज्ञान, निष्कर्ष संपादणे | सदसद्_विवेकपूर्णत्वे (१.७२) [२.८.१_१५]

सत्कीर्तिवन्त, विद्यावन्त | कलावन्त, सामर्थ्यवन्त | युक्तिवन्त सदा_सन्तुष्ट | सद्विद्यावन्त तो जाणावा (१.७३) [२.८.२७_३०]

ऐका **विरक्तान्ची लक्षणे** | शान्त, धार्मिक, निरूपणे | परोपकार प्रेमळपणे | प्रसन्नावधानी चातुर्यपूर्ण (१.७४) [२.९.१_२८]

जाणे मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र विधाने | निवसे मुमुक्षू, जगन्मित्रपणे | निन्दकासही सहाय्यक बने | **समयोचिततेने 'विरक्त'** (१.७५) [२.९.३३_३८]

शहाणे असोनिही मूर्खपणे | '**पढत_मूर्ख'** वागती कैसे ? | त्यान्चीही ऐका लक्षणे | चित्त सावधान करोनिया (१.७६) [२.१०.१_२]

प्रान्जळ बोले ब्रह्मज्ञान | दुराशेत गुन्तले अन्तर्मन | कपटी, कुटिल अन्तःकरण | ग्रन्थ न वाचताच दूषणे ठेवी (१.७७) [२.१०.३_८]

अधिकारेवीण बोले वचन | दुर्बोध शब्दात वर्णी ज्ञान | अभक्त, नास्तिक, माण्डे 'पाषांड' | तो 'पढत_मूर्ख' जाणावा (१.७८) [२.१०.११_२०]

बोले एक करी एक | बोले '**अयथार्थ'** मन_राखण्यास्तव | न सांडी आपुले दुर्गुण, अवगुण | तो 'पढत_मूर्ख' जाणावा (१.७९) [२.१०.२६_३०]

परममूर्खामाजी मूर्ख | जो संसारी मानी सुख | या संसादुःखा ऐसे दुःख | आणीक नाही (१.८०) [२.१०.४०]

इति श्रीसमर्थ_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "सन्क्षिप्त दासबोधामृत"सारे

“ 'स्तवने' तथा 'सदाचारी, दुराचारी व्यक्तिमत्व लक्षणे' " नाम प्रथमोध्यायः